विषय–सूची

- बौद्ध जातकों में वर्णित व्यापार–वाणिज्य — 1–4
  द्रुपद कुमार
- भूमंडलीकरण और भारतीय संस्कृति — 5–7
  ईशा वर्मा
- विन्ध्य क्षेत्र की नवपाषाणिक संस्कृति की खोज का इतिहास — 8–11
  किरन पाल
- वर्तमान समाज में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विचारों पर आधारित योजना — 12–14
  मिथलेश
- बुन्देलखण्ड के महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल — 15–16
  राधा स्वामी मौर्य
- दलित चेतना और बौद्ध धर्म की वैचारिक आधारभूमि — 17–19
  डॉ0 रामकृष्ण
- संस्कृत में आधुनिक सौन्दर्यशास्त्र : समस्या और समाधान — 20–22
  सुधांशु चौबे
- मनुस्मृति में गुरु शिष्य सम्बन्ध — 23–26
  डॉ0 अजय कुमार मिश्र
- जौनपुर के विकास में इलाहाबाद बैंक का योगदान : एक मूल्यांकन — 27–28
  डॉ0 विवेक सिंह
- राजपूत कालीन आर्थिक जीवन (भूमि प्रणाली) — 29–32
  डॉ0 रश्मि सिंह
- नीतियों के साथ, नैतिकता व निगरानी से ही भारत में स्वास्थ्य दर का सुधार — 33–36
  जय भगवान सिंह
- गाँव में जन–स्वास्थ्य की स्थिति : एक सामाजिक अध्ययन — 37–40
  डॉ0 लक्ष्मी व डॉ0 प्रियंका
- औद्योगीकरण–नगरीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप ग्रामीण समुदाय के राजनैतिक जीवन में परिवर्तन — 41–43
  डॉ0 ओमप्रकाश यादव
- प्राचीन भारत में धार्मिक स्थिति में जातियों की भूमिका — 44–46
  अभिषेक सिंह
- जिला पंचायत तथा जिलाधिकारी का सम्बन्ध — 47–50
  डॉ0 सन्तोष कुमार सिंह
- गोंड जनजाति की सामाजिक, आर्थिक स्थिति — 51–52
  अंजली गढ़वाल
- मधुसूदन ओझा कृत छन्द : समीक्षा में छन्दस्तत्त्वविमर्श — 53–56
  प्रियंका
- ग्रामीण युवाओं पर शिक्षा का प्रभाव — 57–58
  राकेश कुमार मौर्य

- कोश निर्माण प्रक्रिया : सैद्धान्तिक विवेचन — 59–52
  डॉ० रामानन्द सिंह चौहान
- आधुनिकता एवम् परम्परा के मध्य, सामाजिक मूल्यों का अस्तित्व : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण — 63–65
  डॉ. पुरुषोत्तम लाल विजय
- प्रबन्ध एवं सामाजिक उत्तरदायित्व — 66–68
  डॉ० दिनेश कुमार तिवारी व डॉ० संजय कुमार तिवारी
- देश के स्वतंत्रता संग्राम में एटा (जनपद) का योगदान — 69–73
  श्याम बाबू
- शिक्षा का महत्त्व — 74–75
  डॉ० रीता
- महिला कर्मियों के संवैधानिक तथा कानूनी अधिकार — 76–77
  डॉ० रत्नेष कुमार त्रिपाठी
- नाथ पंथ एवं गुरु गोरखनाथ : एक विश्लेषण — 78–80
  अजय कुमार मिश्र
- भारतीय संस्कृति में प्रतीकों का महत्व — 81–82
  डॉ० अनूप कुमार
- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि से सम्बन्धित समस्याएँ — 83–84
  डॉ० इरफान हैदर
- भारत में जनसंख्या भूगोल का विकास एवं जौनपुर के बरसठी ब्लाक में जनसंख्या परिवर्तन — 85–87
  पारुल सिंह
- राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम एवं उसकी प्रासंगिकता — 88–92
  डॉ० राजेश कुमार व डॉ० संगीता रानी
- पर्यावरण प्रदूषण समस्त जीवधारियों के अस्तित्व के लिए एक संकट — 93–97
  डॉ० पूनम
- डायस्पोरा : एक संक्षिप्त विश्लेषण — 98–101
  डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह
- बुन्देलखण्ड की जैन प्रतिमाओं में आदिनाथ का अंकन — 102–104
  जय प्रकाश गुप्ता
- ग्रामीण भारत में जनस्वास्थ्य : एक चुनौती — 105–108
  अभिषेक यादव
- मंझन का समाज और मधुमालती — 109–112
  रांध्या सिंह
- उत्तरी भारत में कृषि एवं पशुपालन व्यवस्था (छठी सदी ई०पू० से 320 ई० तक) — 113–115
  सविता गुप्ता
- अज्ञेय साहित्य में यथार्थबोध — 116–118
  डॉ० सुनील कुमार
- स्वतंत्रता से पूर्व महिलाओं के अधिकार एवं मानवाधिकार — 119–121
  डॉ० अलका शर्मा

- प्राचीन भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण में इतिहास लेखन का बदलता दृष्टिकोण — 122–125
  डॉ0 कन्हैया लाल यादव
- गढ़वाली लोकगीतों में मांगल गीत (विवाह संस्कार के सन्दर्भ में) — 126–129
  डॉ0 शोभा रावत
- कबीर की रचनाधर्मिता का अन्यतम साक्ष्य : प्रतीक विधान — 130–135
  डॉ0 कृपा किन्जल्कम्
- लोक साहित्य और 'मधुमालती' — 136–139
  सुकृति मिश्रा
- मुक्तिबोध की कविताओं में जनसंघर्ष — 140–142
  प्रगति मिश्रा
- प्राचीन ब्राह्मण एवं बौद्ध साहित्य में विवेचित आगात्य के अधिकार एवं कार्य — 143–146
  डॉ0 जयन्त कुमार
- कबीर की प्रासंगिकता — 147–151
  डॉ0 मुदिता तिवारी
- गाँधी दर्शन में साध्य और साधन — 152–155
  आनन्द शंकर तिवारी
- प्रत्यभिज्ञादर्शन में परमतत्त्व : एक अनुशीलन — 156–159
  प्रदीप नारायण शुक्ल
- न्याय–वैशेषिक दर्शन में ईश्वर का स्वरूप — 160–163
  अमित सिंह
- अद्वैत वेदान्त में परमसत्ता : एक अनुशीलन — 164–166
  रेखा त्रिपाठी
- अस्तित्व के लिए जमीन की तलाश करती स्त्री की संघर्षगाथा : 'एक जमीन अपनी' — 167–169
  प्रेमलता
- निःशक्त बालकों की शिक्षा व्यवस्था — 170–173
  सूर्य प्रकाश गोंड
- प्राचीन भारतीय अर्थनीति में मानवीय तत्व — 174–177
  डॉ0 विनीत कुमार गुरु
- भारतीय समाज एवं साहित्य में बहुजन स्त्री विमर्श — 178–179
  शकुन्तला देवी 'दीपांजली'
- औपनिवेशिक भारतीय रेलवे के विकास के संदर्भ में ऐतिहासिक लेखनों का पुर्न अवलोकन — 180–184
  शशिकेश कुमार गोंड
- राजा राममोहन राय का सामाजिक चिन्तन — 185–188
  हरि प्रताप सिंह
- बाल श्रमिक और उनकी समस्या : सामाजिक विकास के सन्दर्भ में — 189–191
  लक्ष्मी

- प्राचीन भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण में इतिहास लेखन का बदलता दृष्टिकोण — 122–125
  डॉ० कन्हैया लाल यादव
- गढ़वाली लोकगीतों में मांगल गीत (विवाह संस्कार के सन्दर्भ में) — 126–129
  डॉ० शोभा रावत
- कबीर की रचनाधर्मिता का अन्यतम साक्ष्य : प्रतीक विधान — 130–135
  डॉ० कृपा किन्जल्कम्
- लोक साहित्य और 'मधुमालती' — 136–139
  सुकृति मिश्रा
- मुक्तिबोध की कविताओं में जनसंघर्ष — 140–142
  प्रगति मिश्रा
- प्राचीन ब्राह्मण एवं बौद्ध साहित्य में विवेचित आचार्य के अधिकार एवं कार्य — 143–146
  डॉ० जयन्त कुमार
- कबीर की प्रासंगिकता — 147–151
  डॉ० मुदिता तिवारी
- गाँधी दर्शन में साध्य और साधन — 152–155
  आनन्द शंकर तिवारी
- प्रत्यभिज्ञादर्शन में परमतत्त्व : एक अनुशीलन — 156–159
  प्रदीप नारायण शुक्ल
- न्याय–वैशेषिक दर्शन में ईश्वर का स्वरूप — 160–163
  अमित सिंह
- अद्वैत वेदान्त में परमसत्ता : एक अनुशीलन — 164–166
  रेखा त्रिपाठी
- अस्तित्व के लिए जमीन की तलाश करती स्त्री की संघर्षगाथा : 'एक जमीन अपनी' — 167–169
  प्रेमलता
- निःशक्त बालकों की शिक्षा व्यवस्था — 170–173
  सूर्य प्रकाश गोंड
- प्राचीन भारतीय अर्थनीति में मानवीय तत्व — 174–177
  डॉ० विनीत कुमार गुरू
- भारतीय समाज एवं साहित्य में बहुजन स्त्री विमर्श — 178–179
  शकुन्तला देवी 'दीपांजली'
- औपनिवेशिक भारतीय रेलवे के विकास के संदर्भ में ऐतिहासिक लेखनों का पुर्न अवलोकन — 180–184
  शशिकेश कुमार गोंड
- राजा राममोहन राय का सामाजिक चिन्तन — 185–188
  हरि प्रताप सिंह
- बाल श्रमिक और उनकी समस्या : सामाजिक विकास के सन्दर्भ में — 189–191
  लक्ष्मी

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और नयी कविता — 192—195
  गौरव कुमार जायसवाल
- 'जूठन' आत्मकथा का समीक्षात्मक अध्ययन — 196—200
  अनीता देवी
- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन — 201—204
  डॉ0 प्रेम पाल सिंह व डॉ0 एन0एन0 पाण्डेय
- ग्रामीण रूपान्तरण में राजनीतिक अभिजन की भूमिका — 205—207
  डॉ0 रविकान्त सिंह
- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भग्नाशा एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन — 208—210
  डॉ0 प्रेम पाल सिंह
- **Environment and an Individual's Survival Modes** — 211-213
  Dr. Shweta Mishra
- **Interpretation of Myth and creation of Deprivation (With special reference of Religious Myths)** — 214-216
  Anurag Kumar Pandey
- **Introduction to various Industrial Policies in India** — 217-219
  Taranjeet Singh
- **The Battle of Sarighat: A Turning Point in the History of Assam** — 220-223
  Lakhya Pratim Nirmolia
- **Behavior of Sovereign Bond Market of China** — 224-228
  Shariq Ahmad Bhat
- **Detailled Analysis of Pocso Act 2012: Menace that Act Seeks to Cure** — 229-232
  Sony Singh
- **The Ethics of War Termination in International Relations** — 233-235
  Anusmita Dutta & Ankur Jyoti Bhuyan
- **Dilemma of Terrorism's Concept** — 236-237
  Deepak Kumar Saxena
- **Evolution of Indian Education: The Stages** — 238-240
  Dr. Vishnu Kumar
- **A Comparative Study of Commercial and Social Entrepreneurship** — 241-244
  Ms. Rajni & Yashasvi Dalal
- **Healthcare Services for Human Development in Punjab: Public-Private Partnership** — 245-249
  P.K. Mishra
- **Ecological Insights** — 250-251
  Dr. Mitali Deb
- **Origin and Functioning of Revenue system of Northern India from 10th to 12th Century A.D.** — 252-254
  Dr. Anjali Yadav
- **The Scientific Concept of 'SARGA'** — 255-257
  Dr. Mitali Deb

- **Niti Ayog and Rational for Different Orientation** 258-262
  Vinita Tripathi
- **English Pronunciation Problems in India : A review paper** 263-266
  Shabana Bibi
- **Alleviation of Poverty in Bihar with Special Reference to Siwan District** 267-268
  Dr. B.K. Sinha
- **Basil Henry Liddell Hart theory of Indirect Approach** 269-272
  Dr. Atul Mishra
- **Investors and Behaviour- Modern Trends and Concepts** 273-275
  Dr. Ritika Asthana
- **Application of Green Consumerism in Banking Sector** 276-278
  Dr. S. Kandasamy
- **Competitive Pressure and Customer Satisfaction : Boon or Bane** 279-285
  Sarvesh Singh
- **Quality Management in Higher Education** 286-289
  Dr. Smita Singh
- **Evaluation of Training** 290-291
  Dr. Dwijendra Datta Upadhyay
- **Community participation and sustainable Development: Some Projections** 292-293
  Dr. Anoop Kumar Singh
- **An Appraisal of Sodic Lands : A Case Study** 294-296
  Dr. Archana Raje
- **Prospects and Challenges of Indo-EU Energy Cooperation** 297-300
  Uday Pratap Singh
- **The Indo-French Strategic Partnership in 21st Century** 301-304
  Dr. Raghvendra Pratap Singh
- **Prehistoric Human Activities During Late Pleistocene to Early Holocene Period Around Naun Kalan, Gorma Valley** 305-308
  Amit Singh
- **Girish Karnad's Flowers in the Light of Bhana Tradition of Sanskrit Theatre** 309-311
  Dr. Satish Kumar Prajapati
- **Fostering Innovation Culture In HR To Solve The Uprising Challenges** 312-315
  Meghana Tripathi & Prof. Rajeev Prabhakar
- **Role of Information Technology in Developing India** 316-320
  Deepika Singh
- **The Institutionalization of the Debt Recovery Mechanism in India** 321-324
  Brijesh Kumar Singh
- **Judicial System In Ancient India** 325-326
  Raksha Singh
- **A Study of the Gender wise Influence of Emotional Maturity on Teacher's Job Performance At Senior Secondary Level In Meerut District** 327-331
  Sarita Sharma

Research Discourse - ISSN 2277-2014
An International Refereed Research Journal
Published by : South Asia Research & Development Institute
Varanasi, UP (INDIA)

Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF
IIJ Impact Factor : 2.471
Year-VII, No. XXIV, July-September, 2017
Page No. : 321-324

The Institutionalization of the Debt Recovery Mechanism in India

Brijesh Kumar Singh*

ABSTRACT : Tribunals, a prominent feature in the present times, are essentially a twentieth century phenomenon. The Debts Recovery Tribunals were established under The Recovery of Debts Due to Banks and Financial Institutions Act, 1993. The origins of the process of tribunalisation in independent India began with the Constitution, Forty Second Amendment Act, 1976, which inserted Part XIVA (Articles 323A, and 323B), in the Constitution. These Articles enable Parliament to constitute tribunals, which would exclude writ jurisdiction of the Supreme Court and the High Courts under Articles 32 and 226 respectively. The Government of India established the T Tiwari Committee in 1984, to examine into the legal difficulties of banks and financial institutions. The Narshimsham Committee (1991), whose constitution coincided with the advent of the liberalisation program in India, endorsed the recommendations of the Tiwari Committee. The consequence of this was the enactment of Recovery of Debt Due to Banks and Financial Institutions Act, by the Parliament in 1993. The Debts Recovery Tribunal now deal with two different Acts, namely the Recovery of Debts Due to Banks and Financial Institutions Act 1993 as well as the Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interests Act 2002. While the aim of the both the Acts is one and the same, but their route is different. The Supreme Court held that the Debt Recovery Tribunals were established by the Parliament in exercise of its powers conferred by Article 246 read with entry 45 (Banking) of List I (Union List) of Schedule Seventh of the Constitution.

INTRODUCTION : *The Debts Recovery Tribunals (hereinafter referred to as DRTs) were established under The Recovery of Debts Due to Banks and Financial Institutions Act, 1993[1]. These tribunals were established as instruments, aiding the banks and financial institutions in recovering their debts from defaulting borrowers. The establishment of these Tribunals was in some way a desperate measure on the part of the Parliament, to counter the growing menace of outstanding loans of banks and financial institutions, which had reached alarming proportions, by the closing decade of the twentieth century The Parliament, established these tribunals in exercise of its powers under Article 246 (1), read with Entry 45 (Banking) of List-1 (Union List) of Schedule 7, of the Constitution of India[2].*

DEFINITIONS : ***The meaning of the term 'debt', under section 2 (g) of The Recovery of Debts Due to Banks and Financial Institutions Act, 1993 was been given an expanded meaning by the Supreme Court in*** **United Bank of India v. The Debt Recovery Tribunal*** ***to mean any liability alleged as due from any person to a bank during the course of any business activity undertaken by the bank.***

Section 2(o) of the Act, clearly lay down, that, "Tribunal means the Tribunal established under Sub Section (1) of S.3 of this Act.

HISTORY OF TRIBUNALS IN INDIA : ***Tribunals, a prominent feature in the present times, are essentially a twentieth century phenomenon. The origins of the process of tribunalisation in independent India began with the Constitution, Forty Second Amendment Act, 1976, which inserted Part XIVA (Articles 323A, and 323B), in the Constitution. These Articles enable Parliament to constitute tribunals, which would exclude writ jurisdiction of the Supreme Court and the High Courts under Articles 32 and 226 respectively. However, banks and financial institutions in India historically did not have direct authority to liquidate the collateral of a defaulting borrower. Civil courts had come to the conclusion, after decades of reviewing of case law, that in almost all cases the suit instituted by banks and financial institutions, there is hardly any defense and that the delay in disposal of the cases in the court is not due to the fault of the banks or financial institutions.[4]***

*Assistant Professor, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (Central University) Bilaspur